विशेष बातचीत. पाइपलाइन में है एम्बा, एएसीएसबी और इक्विस एक्रेडिटेशन, आइआइएम के डायरेक्टर ने पूरा किया तीन वर्ष का कार्यकाल

ग्लोबली ट्रिपल क्राउन दिलाने की तैयारी में जुटा आइआइएम

क्रांति दीप @ रांची

उद्योग जगत और मार्केट में तेजी से हो रहे बदलाव को देखते हुए प्रबंधन शिक्षा के पाठ्यक्रम में बदलाव की जरूरत है. यह बदलाव बाजार की चुनौतियों का हल तलाशने वाला होना चाहिए. आइआइएम रांची अपने पाठ्यक्रम को इसके अनुरूप ढाल रहा है. आइआइएम लगातार ग्लोबली ट्रिपल क्राउन के लिए प्रयासरत है. इसके मिलने के बाद अंतरराष्ट्रीय स्तर पर संस्थान की पहचान मिलेगी. इसकी डिग्री की मान्यता विदेश में भी होगी. शिक्षा में एआइ टूल्स को भी शामिल किया जा रहा है. ये बातें आइआइएम रांची के डायरेक्टर दीपक कुमार श्रीवास्तव ने कही. तीन वर्ष का कार्यकाल पूरे कर लिए हैं. उन्होंने तीन साल में किये गये काम की जानकारी प्रभात खबर के साथ साझा किये.

Q आप डायरेक्टर बने थे तो आपका विजन क्या था, तीन साल के सफर को कैसे देखते हैं?

निदेशक पद संभालने के बाद से मेरा उद्देश्य रचनात्मकता और प्रयोगशीलता की संस्कृति को बढ़ावा देना रहा है. साथ ही वैश्विक दृष्टिकोण के साथ स्थानीय प्रासंगिकता को भी बनाए रखना है. हमने स्ट्रेटेजीक प्लान आइआइएम रांची@2030 बनाये. चार रणनीतिक प्राथमिकताओं शिक्षा, प्रभावशाली अनुसंधान, अंतरराष्ट्रीय सहयोग और सामाजिक प्रभाव पर ध्यान केंद्रित किया गया. पहली बार वर्तमान समय के जरूरतों के अनुसार सभी प्रोग्राम के करिकुलम में बदलाव किये गये. नया एकेडमिक एरिया लीगल स्टडीज एंड रिस्पोंसिबल बिजनेस एरिया को शामिल किया गया. नये कोर्स शामिल किये गये. इलेक्टिव कोर्स को बढ़ाया गया. अब लगभग 49 इलेक्टिव कोर्स ऑफर किये जा रहे हैं.

- रचनात्मकता और प्रयोगशीलता की संस्कृति को बढ़ावा देने पर जोर : दीपक श्रीवास्तव
- ग्लोबली ट्रिपल क्राउन मिलने के बाद अंतरराष्ट्रीय स्तर पर आइआइएम रांची की पहचान होगी
- पिछले तीन वर्षों में शिक्षकों के 400 से अधिक शोध पत्र प्रमुख जर्नलों में हुए प्रकाशित

Q शैक्षणिक क्षेत्र में कौन-कौन से बदलाव किये गये?

हमने शिक्षा में समस्या-केंद्रित पद्धति शुरू किये. प्रत्येक सत्र एक वास्तविक व्यावसायिक समस्या के इर्द-गिर्द होता है. केस आधारित शिक्षा पर जोर दिया गया. छठे ट्राइमेस्टर में लगभग 25 मल्टी डिसिप्लिनरी कोर्स को शामिल किये गये. हमने पारंपरिक परीक्षा हॉल आधारित मिड टर्म परीक्षाओं को खत्म कर इसकी जगह आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस (एआइ) आधारित व्यवसायिक समस्या-समाधान प्रोजेक्ट्स को लागू किया है. इस पहल को वाई यानी वर्किंग विद एआइ प्रोजेक्ट का नाम दिया गया है.

Q पिछले तीन वर्षों में रिसर्च के क्षेत्र में क्या-क्या काम हुए?

पिछले तीन वर्षों में संस्थान के शिक्षकों के 400 से अधिक शोध पत्र प्रमुख जर्नलों में प्रकाशित हुए हैं. 40% पेपर एबीडीसी रैंकिंग के ए या ए स्टार श्रेणी में हैं. आइआइएम रांची रिसर्च में लगातार बेहतर काम कर रही है.

Q इस दौरान आपके लिए क्या-क्या चुनौतियां रही?

मैनेजमेंट एजुकेशन में क्लासरूम ही लैब है. ऐसे में स्थाई कैंपस में शिफ्ट होना बड़ी चुनौती थी. इसके लिए ज्वाइन करने के साथ ही काम करना शुरु कर दिए थे. जिसके बाद कुछ माह में ही हम स्थाई कैंपस में शिफ्ट हो गए. इसके साथ ही शिक्षकों की संख्या में बढोत्तरी करना व विदेशी शिक्षकों को यहां आने के लिए तैयार करना चुनौती रहा. अब यहां 78 शिक्षक सेवा दे रहे हैं. 10 इंटरनेशनल फैक्ल्टी भी जुड़े हैं.

Q आने वाले वर्षों में आपकी शीर्ष प्राथमिकताएं क्या हैं?

हम अंतरराष्ट्रीय एक्रीडिटेशन को लेकर तेजी के काम कर रहे हैं. हमारा लक्ष्य है एएमबीए, एएसीएसबी और इक्यूआइएस जैसी अंतरराष्ट्रीय मान्यता प्राप्त करें. इससे संस्थान दुनियाभर में पहचान मिलेगी. छात्रों की डिग्री की मान्यता विदेश में होगी.

Q शिक्षा में एआइ को देखते हैं?

एआइ को एक टूल की तरह देखना चाहिए, जो किसी काम को तेजी से पूरा करने में मददगार है. इस पर परी तरह से निर्भरता नहीं होनी चाहिए. इंडस्ट्री ने एआइ को अपना लिया है. अगर अभी हमने छात्रों को ट्रेंड नहीं किया तो बहुत देर हो जायेगी.

Prabhat Khabar_19.08.2025_P. 6